पुस्तक समीक्षा - शोक और श्रद्धा का संतुलित संगम - मधुर स्मृति (काव्य संग्रह)

मानवीय जीवन में स्मृतियों का स्थान अत्यंत अद्वितीय है। समय भले ही बीत जाए, परंतु स्मृतियाँ शाश्वत रहती हैं। वे कभी आँसुओं के रूप में आती हैं, तो कभी मुस्कान बनकर मन को गुनगुनाती हैं। इन्हीं स्मृतियों की गहनता और आत्मीयता को कवयित्री मीनू अग्रवाल ने अपने काव्य संग्रह "मधुर स्मृति" में अत्यंत संवेदनशीलता से संजोया है। यह संग्रह केवल कविताओं का समूह नहीं है, बल्कि यह जीवन, मृत्यु और स्मृति के शाश्वत सत्य का साहित्यिक चित्रण है।

"मधुर स्मृति" की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक बेटी की ओर से अपने पिता के प्रति लिखा गया साहित्यिक श्रद्धांजलि-पुष्प है। कवयित्री ने अपने पिता की सरलता, सौम्यता, संगीतप्रेम, उदारता और स्नेहमयी छवि को शब्दों के माध्यम से अमर कर दिया है। हर कविता में पाठक को यह अनुभव होता है कि प्रियजन भले ही शारीरिक रूप से हमारे बीच न रहें, परंतु उनकी उपस्थिति स्मृतियों और संस्कारों के रूप में हमारे जीवन में बनी रहती है। यही इस संग्रह की आत्मा है।

इस पुस्तक की कविताएँ अलग-अलग भावभूमियों पर आधारित हैं। "शोकाकुल मन" में पिता के विछोह की गहन वेदना है, जो किसी भी पाठक को भीतर तक व्याकुल कर देती है। वहीं "मुस्कराती यादें" और "वो चमकता तारा"

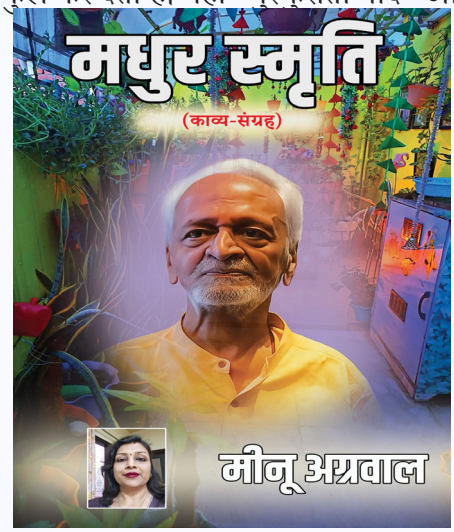

पुस्तक का नाम - मधुर स्मृति काव्य संग्रह
लेखिका - मीनू अग्रवाल

प्रकाशक - इंकलाब पब्लिकेशन मुंबई
जैसी कविताएँ आश्वस्त करती हैं कि मृत्यु अंत नहीं है, बल्कि आत्मा की यात्रा का एक नया पड़ाव है। कवयित्री ने अपने पिता को स्मरण करते हुए यह विश्वास जगाया है कि वे आज भी आशीर्वाद के रूप में उनके परिवार के साथ हैं। संग्रह का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है इसकी दार्शनिक गहराई। "आत्मा की अनंत यात्रा", "रूह की यात्रा" और "अमर आत्मा" जैसी कविताएँ जीवन और मृत्यु के पारंपरिक दृष्टिकोण से परे जाकर आध्यात्मिक सन्देश देती हैं। इन कविताओं में आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म और परमात्मा से एकत्व की अनुभूति का अद्भुत वर्णन है। पाठक जब इन्हें पढ़ता है, तो वह केवल एक बेटी की पीड़ा से ही नहीं गुजरता, बल्कि जीवन के व्यापक सत्य से भी परिचित होता है। यही इस संग्रह का वैश्विक और सार्वभौमिक आयाम है।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से देखें तो मीनू अग्रवाल की कविताएँ अत्यंत सहज, सरल और प्रवाहमयी हैं। उन्होंने कठिन और दुरूह शब्दों का सहारा नहीं लिया, बल्कि भावों की गहराई को साधारण किन्तु सजीव शब्दों में व्यक्त किया है। यही कारण है कि ये कविताएँ सीधे हृदय तक पहुँचती हैं। पाठक को कहीं भी कृत्रिमता या बनावट का अनुभव नहीं होता। उनकी कविताओं में आत्मीयता है, सहजता है और सबसे बढ़कर जीवन का स्पंदन है।

काव्य-संग्रह का शीर्षक "मधुर स्मृति" भी अपने आप में अत्यंत सार्थक है। स्मृतियाँ चाहे दुःख से भरी हों या सुख से, वे अंततः हमारे जीवन को मधुरता से भर देती हैं। यही मधुरता इस संग्रह की प्रत्येक कविता में विद्यमान है। स्मृतियाँ यहाँ आँसुओं से भीगी भी हैं और मुस्कान से महकी भी हैं। कहीं यह संग्रह हमें रुलाता है तो कहीं यह जीवन के प्रति नई आशा भी जगाता है।

साहित्यिक दृष्टि से देखें तो यह कृति केवल व्यक्तिगत संस्मरण का संग्रह नहीं है। यह हर उस पाठक की संवेदना से जुड़ जाती है जिसने अपने जीवन में किसी प्रियजन को खोया है। यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। जब पाठक "एक टुकड़ा यादों का" या "सुनहरी याद" पढ़ता है, तो उसे अपने पिता, माता, मित्र या किसी अन्य प्रियजन की यादें अनायास ही ताजा हो जाती हैं। इस प्रकार यह कृति व्यक्तिगत अनुभव को सार्वभौमिक बनाती है, जो किसी भी महान साहित्य की पहचान होती है।

पुस्तक में केवल कविताएँ ही नहीं हैं, बल्कि एक कहानी "मधुर स्मृति" भी शामिल है, जो कवयित्री के पिता के जीवन-संघर्ष, पारिवारिक जिम्मेदारियों और उनके व्यक्तित्व की गहराइयों को उजागर करती है। यह अंश इस संग्रह को और भी आत्मकथात्मक और वास्तविक बना देता है। पाठक यहाँ केवल कवयित्री की भावनाओं को नहीं, बल्कि एक पूरे परिवार के जीवन को देख पाता है। इससे पुस्तक की प्रामाणिकता और प्रभावशीलता और अधिक बढ़ जाती है।

इस संग्रह की सबसे सुंदर विशेषता यह है कि इसमें शोक और श्रद्धा दोनों का संतुलित संगम है। यहाँ आँसू हैं तो उनमें प्रेम की मिठास भी है। यहाँ पीड़ा है तो उसमें स्मृति की गरिमा भी है। यही संतुलन इस कृति को महज एक शोकगीत बनने से बचाता है और इसे जीवन का उत्सव बना देता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि "मधुर स्मृति" एक अत्यंत भावनात्मक, आत्मीय और प्रेरणादायी काव्य-संग्रह है। यह पाठक को केवल रुलाता ही नहीं, बल्कि उसे जीवन की गहराइयों से भी परिचित कराता है। यह कृति हमें यह सिखाती है कि मृत्यु जीवन का अंत नहीं है, बल्कि आत्मा की नई यात्रा का प्रारंभ है। प्रियजन भले ही हमारे बीच न रहें, पर उनकी स्मृतियाँ, उनके संस्कार और उनका आशीर्वाद हमारे जीवन को दिशा देते रहते हैं।

यह संग्रह हर उस व्यक्ति के लिए एक दर्पण है जिसने अपने जीवन में प्रियजनों को खोया है। यह हमें अपने दुःख को स्वीकार करने, उसे स्मृतियों की मिठास में बदलने और जीवन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है।

मीनू अग्रवाल की "मधुर स्मृति" साहित्य, संवेदना और स्मृति—तीनों का अद्भुत संगम है। यह कृति न केवल उनके पिता को श्रद्धांजलि है, बल्कि प्रत्येक पाठक को यह संदेश भी देती है कि स्मृतियाँ ही जीवन को अर्थपूर्ण और मधुर बनाती हैं। यह संग्रह हर साहित्य-प्रेमी के पुस्तकालय में होना चाहिए, क्योंकि यह केवल पढ़ने की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन जीने का संदेश है।

- रमाकांत यादव (सागर यादव जख्मी)
मुंबई,महाराष्ट्र